

गर्वित (a r. गर्वू s. त्, nisi a गर्वू s. इत्) superbus. DEV. 8.
24. R. Schl. I. 7. 6. RAGH. 9. 55. 19. 20.

गर्ह 1. 10. p. a. vituperare, maledicere, conviciari. MAN. 11. 229.: दुष्कृतङ् कर्म गर्हति; H. 4. 6.: नै नाङ् गर्हितुम् अर्हसि; RAM. III. 59. 23.: कस्माद् अजानन्तङ् गर्हसे; BR. 1. 33.: नृशंसो गर्हितो ब्रह्मैः; HIT. 109. 13.: विषमां हि दशाम् प्राय दैवङ् गर्हयते नरः (Haec radix e ग्रहू sumere orta esse videtur, transposito *ra* in *ar*; quod ad significationem attinet, respicias lat. *reprehendo*. E गर्हू mutato रू in लू ortum est गल्हू q. v.)

c. परि *id.* RAM. III. 75. 43.: तातन् न परिगर्हेऽहम्.
c. विं *id.* R. Schl. II. 17. 10.: स्वात्मा 'यू एनम् विगर्हते; MAN. 11. 232.: कर्म विगर्हितम्.

गर्हा f. (r. गर्हू s. अर्हा) vituperatio, reprehensio, objurgatio. MAH. 1. 6056.

गल् 1. p. 10. a. (आके) defluere, delabi, decidere, excidere. RAGH. 19. 22.: गलिताशुकिन्डु; 16. 58.: गलिताङ्गाः; BHAR. 1. 89.: गलत्कुष्ठाभिमूत; HIT. 10. 22.: गलितनखदन्त; RAGH. 7. 10.: गलन्ती कस्याश्चिद् आसीद् रसना. - गलितवयस् elapsam juventutem habens, senex, decrepitus. RAGH. 3. 70. (Primitiva hujus radicis significatio fluere esse videtur, quam ob rem germ. vet. QUALL scaturire, - quillu, qual, quullumēs - huc traxerim, unde quella fons; cf. जल् aqua.)

c. अरा praef. सम् *id.* MAH. 1. 1409.: समागलितपादपः.
c. निस् *id.* RAGH. 5. 17.: निर्गलितम्बुगर्म शरद्वेघन् ना 'र्दति चातको 'पि.
c. वि *id.* CAUR. 28.: विगलदशुजलाकुलाक्षी; UR. 62. 10.; RAGH. 9. 67.: रतिविगलितबन्धः केशपाशः; GIT. Gov. I. 3. 31.: विगलितलक्षित.

गल् m. collum. H. 2. 4. (Fortasse a r. गृ, e गर्ज्, devorare, mutato रू in लू, v. Wils. et cf. गछा, cui formā respondere vldetur lat. *collum*, mutatā mediā in tenuem; germ. *Hals*, cuius initialis aspirata hititur lat. *collum*, gr. comp. 87.; cf. etiam lat. *gula* et nostrum *Kehle*.)

गलहस्त m. (e गल् et हस्त manus) actio collum tor-

quendi. UP. 66.: अनिच्छन् गलहस्तेन ताभिर् निर्वासितस् ततः.

गल्भू 1. a. (आधार्च्छ्य x. धृष्टत्वे r.) fortem, audacem, strenuum esse. (Hib. *galbha* «rigour, hardness».)

गछा m. gena. HEM., v. गल्.

गल्हू 1. a. i. q. गर्हू *unde ortum est mutato* रू in लू.

गवय m. (ut videtur, a गो s. अय) bovis species «the Gyal». DR. 4. 15.

गवाक्ष m. (bovis oculus, e रात्रप. गो et अक्ष) fenestra rotunda. RAGH. 7. 7.

गविष् 10. p. (ut mihi videtur, e गव, a गो, et इष् desiderare, v. gr. 652. suff. गोयुगा, गोष्ट) quaerere, venari.

गव्य (a गो s. य) bubulus, bovinus. AM.

गल् 10. p. densum, impervium esse; cf. गाल्.

गहन (r. गर्हू s. अन) 1) densus, spissus, impervius. H. 1. 4. 5. 2. 26. BH. 4. 17. 2) n. silva. UR. 57. 7. infr.

गह्वर (r. गर्हू s. वर) 1) m. caverna. RAGH. 2. 26. 46. 2) n. silva. AM.

गा 3. p. (grammatici radicem गा p. a. ire perperam ad 1^{मात्र} classem referunt, et praeterea radicem गा 3. p. admittunt, quam per स्तुतौ, जन्मनि, laudare, generare, explicant) ire. RAGH. 11. 73.: अन्यदा जगति राम इत्यु अर्यं शब्द उच्चित एव माम् अगात्; NALOD. Schol. 4. 4.: भीमगृहम् अगात्; RIGV. Ros. 2. 3.: वायो तव प्रपृष्ठती धेना निगाति दाणुषे «Vayus! tua approbans vox adit cultorem». (Hujus radicis, tam simplicis quam compositae, huc usque in linguâ classicâ fere solum praeteritum multiforme inveni. Praeteritum redupl. Atmanepadi occurrit in अधिगम् legere, q.v. Supra laudata forma वेदिका निगाति, nisi cum Skandasvâmi-bhâschyo निगाति est legendum, v. Ros. p. IX., anomala est pro निगाति, mutato म् syllabae reduplicative in द्, quâ in re analogiam sequitur verborum तिष्ठामि et निद्वामि, gr. min. 295., et accurate convenit cum gr. Βίβημι, quod ortum esse censeo, e γίγνημι, mutatâ gutturali me-